Write short notes on the following:
1. एरण (Eran), 2. भीम बेटका (Bhim Betka), 3. शैलचित्र कला (Rock Painting Art): 4. शिकारी और खाद्य संग्राहक समाज (Hunter-Gatherer Society)

1. एरण (Eran): गुप्तकाल का एक महत्वपूर्ण पुरातात्विक परिदृश्य।
एरण, जिसका प्राचीन नाम 'एरिकिण' था, मध्य प्रदेश के सागर जिले में बीना नदी (प्राचीन वेन्दा) के तट पर स्थित एक ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण स्थल है। इसका महत्व केवल गुप्तकाल तक ही सीमित नहीं है, बल्कि उत्खनन से यहाँ ताम्रपाषाणिक काल (Chalcolithic Period) से लेकर मध्यकाल तक की सतत मानव बसावट के प्रमाण मिलते हैं।
•ऐतिहासिक और भौगोलिक महत्व~
* रणनीतिक स्थिति: एरण रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण स्थान पर स्थित था, जिसे अक्सर मालवा और बुंदेलखंड के बीच का प्रवेश द्वार माना जाता है। इस भौगोलिक स्थिति के कारण, यह क्षेत्र मौर्य, शुंग, नाग और गुप्त शासकों के लिए एक महत्वपूर्ण प्रशासनिक और सैन्य केंद्र रहा।
* पुरातात्विक कालक्रम: उत्खनन में तांबे के औजारों, मनकों, मिट्टी के बर्तनों और ताम्रपाषाणिक संस्कृति के साक्ष्य मिले हैं, जो एरण को इस संस्कृति की उत्तरी सीमा पर स्थापित करते हैं।
* गुप्तकालीन प्रभुत्व: गुप्त काल में (चौथी से छठी शताब्दी ईस्वी) एरण की प्रसिद्धि अपने चरम पर थी। यहाँ के अभिलेखों से पता चलता है कि यह क्षेत्र गुप्त सम्राटों की अधीनता में था, और यहाँ "महाराज सुरश्मिचन्द्र" जैसे प्रांतीय शासक शासन करते थे।
•स्मारक और अभिलेखीय महत्व~
* विष्णु और वराह मंदिर: एरण में गुप्तकाल में निर्मित विष्णु और उनके अवतारों को समर्पित कई मंदिरों के अवशेष हैं। इनमें भगवान विष्णु का मंदिर, नृसिंह मंदिर और विशेष रूप से एक विशालकाय वराह प्रतिमा उल्लेखनीय है। इस वराह प्रतिमा पर एक अभिलेख है जिसमें हूण शासक तोरमाण का उल्लेख है, जो गुप्तों के पतन के बाद इस क्षेत्र पर उसके अस्थायी नियंत्रण को दर्शाता है।

* सती प्रथा का पहला लिखित प्रमाण (510 CE): एरण का सबसे प्रसिद्ध पुरातात्विक खोज भानुगुप्त के सेनापति गोपराज का सती स्तंभ अभिलेख है। यह अभिलेख स्पष्ट रूप से उल्लेख करता है कि गोपराज के युद्ध में वीरगति प्राप्त करने के बाद, उनकी पत्नी उनके शव के साथ सती हो गईं थीं। यह साक्ष्य सती प्रथा के शुरुआती ज्ञात ऐतिहासिक और अभिलेखीय प्रमाणों में से एक है।

2. भीम बेटका (Bhim Betka): प्रागैतिहासिक जीवन का दृश्य अभिलेख।

भीम बेटका (जिसका अर्थ 'भीम के बैठने का स्थान' माना जाता है) भारतीय प्रागैतिहासिक कला का एक विश्व धरोहर स्थल है, जो मध्य प्रदेश के रायसेन जिले में स्थित है। यह विंध्य पर्वतमाला के दक्षिणी किनारे पर स्थित है। इस स्थल की खोज डॉ. वी.एस. वाकणकर ने 1957-58 में की थी।

•भूवैज्ञानिक और पुरातात्विक पृष्ठभूमि~

* शैलाश्रय संरचना: यह क्षेत्र बलुआ पत्थर (Sandstone) की विशाल चट्टानों से बना है, जिसमें हजारों प्राकृतिक शैलाश्रय और गुफाएँ हैं। इन संरचनाओं ने कठोर जलवायु परिस्थितियों से आदिम मानव को आश्रय प्रदान किया।

* मानव इतिहास का कालक्रम: भीम बेटका भारत में सबसे लंबे समय तक चली मानव अधिवास श्रृंखला में से एक को दर्शाता है। यहाँ के निष्कर्ष उच्च पुरापाषाण काल (Upper Paleolithic) से लेकर ऐतिहासिक काल तक फैले हुए हैं, जो मानव विकास के विभिन्न चरणों को दर्शाते हैं।

* मध्यपाषाणिक कला का प्रभुत्व: यद्यपि यहाँ पुरापाषाणिक कला भी मौजूद है, अधिकांश और सबसे विस्तृत चित्रकलाएँ मध्यपाषाण काल (Mesolithic Period) की हैं। ये चित्रकलाएँ मानव के शिकार-संग्रहक जीवन शैली से एक संक्रमण चरण को दर्शाती हैं।

•शैलचित्र: विषय और शैली~

* विषय-वस्तु की विविधता: चित्रों में आदिम मानव के जीवन के लगभग सभी पहलुओं को दर्शाया गया है। मुख्य विषयों में शामिल हैं:

* शिकार के दृश्य: सामूहिक शिकार, शिकारियों को भाले, तीर-कमान जैसे हथियारों के साथ दिखाया गया है।
* जानवरों का चित्रण: बाघ, गैंडा, हाथी, हिरण, जंगली सूअर जैसे जानवरों को अत्यधिक यथार्थवादी और गतिशील शैली में चित्रित किया गया है।
* सामाजिक क्रियाएँ: नृत्य, संगीत (वाद्य यंत्र बजाते हुए), बच्चे के जन्म, और धार्मिक अनुष्ठानों के दृश्य भी चित्रित हैं।
* रंगों का प्रयोग: चित्रकारों ने मुख्य रूप से खनिज रंगों का उपयोग किया:
* लाल और बैंगनी: लौह ऑक्साइड (हेमेटाइट/गेरू) से।
* सफेद: चूना पत्थर (लाइमस्टोन) या कैओलिन से।
* हरा: तांबे के यौगिकों या हरी कैल्सेडोनी से।
* तकनीक: ये रंग जानवरों की चर्बी और गोंद के साथ मिलाकर तैयार किए जाते थे। चित्रकला के लिए पतली टहनियों या जानवरों के बालों से बने ब्रश का उपयोग किया जाता था।

3. शैलचित्र कला (Rock Painting Art): प्रागैतिहासिक कला और संस्कृति का दस्तावेज़।

शैलचित्र कला, जिसे अक्सर रॉक आर्ट या पेट्रोग्लिफ्स (चट्टानों पर नक्काशी) के साथ संदर्भित किया जाता है, प्रागैतिहासिक मानव की वह कलात्मक विरासत है जो गुफाओं और चट्टानों की दीवारों पर चित्रित या उकेरी गई है।

उत्पत्ति और उद्देश्य

* मानव अभिव्यक्ति की आवश्यकता: शैलचित्र मानव मस्तिष्क के संज्ञानात्मक और प्रतीकात्मक विकास को दर्शाते हैं। यह कला केवल सौंदर्यबोध के लिए नहीं थी, बल्कि इसका गहरा सांस्कृतिक और सामाजिक महत्व था।
* संभावित उद्देश्य: पुरातत्वविदों ने इसके कई संभावित उद्देश्य सुझाए हैं:
* जादू और अनुष्ठान: शिकार की सफलता सुनिश्चित करने के लिए जादुई अनुष्ठानों के भाग के रूप में।
* सूचना का संचार: शिकार के मार्गों, खतरों या महत्वपूर्ण घटनाओं को नए सदस्यों को संप्रेषित करने के लिए।
* सामाजिक पहचान: समूह की पहचान या क्षेत्रीय दावे को चिह्नित करने के लिए।

* शिक्षा और कहानी सुनाना: अनुभव और ज्ञान को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक मौखिक रूप से हस्तांतरित करने का एक दृश्य साधन।

•शैलीगत और तकनीकी पहलू~

* भारत में शैलकला के चरण (उदाहरण भीमबेटका के संदर्भ में):

* उच्च पुरापाषाण: हरे और गहरे लाल रंग के बड़े जानवरों के रैखिक चित्रण।

* मध्यपाषाण: छोटे, अधिक गतिशील और अलंकृत मानव और पशु आकृतियाँ; शिकार, युद्ध और नृत्य के दृश्यों की प्रमुखता।

* उत्तर-पाषाण/ताम्रपाषाण और ऐतिहासिक काल: ज्यामितीय डिज़ाइन, पालतू जानवरों (घोड़े, हाथी) का चित्रण, और कभी-कभी धार्मिक प्रतीकों का समावेश।

* रंगों की तैयारी: पिगमेंट (रंगद्रव्य) प्राकृतिक खनिजों को पीसकर प्राप्त किए जाते थे और उन्हें बाइंडर (चिपकाने वाले पदार्थ) जैसे पशु चर्बी, पौधों के रस या गोंद के साथ मिलाकर तैयार किया जाता था।

4. शिकारी और खाद्य संग्राहक समाज (Hunter-Gatherer Society): मानव इतिहास की नींव।

शिकारी और खाद्य संग्राहक वह प्रारंभिक मानव समाज था जो कृषि के उदय से पहले, लगभग 2 मिलियन वर्ष (20 लाख वर्ष) तक पृथ्वी पर प्रमुख जीवन शैली थी। उनका जीवन पूरी तरह से अपने तत्काल पर्यावरण से खाद्य संसाधनों के अधिग्रहण पर निर्भर करता था।

•आर्थिक और निर्वाह प्रणाली~

* प्राथमिक खाद्य स्रोत:

* शिकार (Hunting): मुख्य रूप से बड़े और मध्यम आकार के जानवरों (जैसे हिरण, जंगली मवेशी) का शिकार करना।

* खाद्य संग्रहण (Gathering): जंगली फल, जामुन, नट, जड़ें, कंद-मूल और अंडे आदि इकट्ठा करना। महिलाएँ आमतौर पर संग्रहण का कार्य करती थीं।

* गतिशीलता (Nomadism): ये समूह ऋतुओं और जानवरों के प्रवास पैटर्न के अनुसार लगातार चलते रहते थे, ताकि किसी एक क्षेत्र के संसाधनों का अत्यधिक शोषण न हो। इस गतिशीलता ने उनके सामाजिक ढांचे को लचीला बनाए रखा।
* जनसंख्या घनत्व: प्राकृतिक संसाधनों पर अत्यधिक निर्भरता के कारण इन समाजों में जनसंख्या का घनत्व बहुत कम होता था।

•सामाजिक और तकनीकी ढाँचा~

* सामाजिक संगठन:
  * समूह (Bands): समाज छोटे, स्वायत्त और लचीले समूहों (लगभग 20-50 सदस्य) में संगठित था, जिनका नेतृत्व अक्सर अनौपचारिक होता था (कोई कठोर पदानुक्रम नहीं)।
  * समानता (Egalitarianism): संसाधनों का संग्रहण और उपभोग समान रूप से होता था, और व्यक्तिगत संपत्ति का विचार सीमित था, जिसके कारण ये समाज काफी हद तक समतावादी थे।
* तकनीकी विकास: इन समाजों की तकनीक का आधार पाषाण उपकरण थे। पुरापाषाण काल में बड़े पत्थरों के उपकरण (जैसे हाथ की कुल्हाड़ी) का उपयोग होता था, जबकि मध्यपाषाण काल में छोटे और अधिक परिष्कृत औजारों, जिन्हें माइक्रोलिथ कहा जाता है, का विकास हुआ।

शिकारी-संग्राहक समाज मानव अस्तित्व के लिए एक सफल मॉडल था, लेकिन धीरे-धीरे जलवायु परिवर्तन और जनसंख्या वृद्धि के कारण इसने कृषि आधारित जीवन शैली को अपनाना शुरू कर दिया।